IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, February 2025
Impact Factor: 7.67

Hkkjr vkj ikfdLrku d f}i{kh; lc/kk dh i"BHkfe %
lhekikj vkrdokn d fo'k'k lUnHk e
ckyLo#i "kek] "kk/k Nk=] jktuhfr foKku foHkkx

Mk- vjfoUn dekj]
,lkfl,V ikQslj] jktuhfr foKku foHkkx
ekukM fo'ofo|ky;] gkiM] m-i-

'kks/k lkj % *प्रस्तुत शोध पत्र भारत और पाकिस्तान के द्विपक्षीय संबंधों की पृष्ठभूमि में सीमापार आतंकवाद की उत्पत्ति, इसके स्वरूप, प्रमुख घटनाओं, भारत की सुरक्षा नीतियों और इसके वैश्विक व क्षेत्रीय प्रभावों का एक व्यापक विश्लेषण है। 1947 के विभाजन के बाद से ही दोनों देशों के संबंध कश्मीर मुद्दे और वैचारिक मतभेदों के कारण तनावपूर्ण रहे हैं। हालांकि, 1980 के दशक के उत्तरार्ध से पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ हजार घाव देकर मारना की सैन्य रणनीति के तहत सीमापार आतंकवाद को एक राज्य–नीति के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। यह शोध पत्र ऐतिहासिक दस्तावेजों, प्रमुख आतंकी हमलों (जैसे 2001 का संसद हमला, 2008 का मुंबई हमला, और 2019 का पुलवामा हमला) और हाल के भू–राजनीतिक बदलावों के आलोक में यह रेखांकित करता है कि जब तक सीमापार से आतंकवाद का ढांचा पूरी तरह नष्ट नहीं होता, तब तक दोनों देशों के बीच शांति वार्ताओं की बहाली असंभव है। अंत में, यह शोध पत्र भारत की रक्षा नीतियों में आए रणनीतिक बदलावों जैसे सर्जिकल स्ट्राइक और कूटनीतिक अलगाव तथा भावी समाधानों की समीक्षा करता है।*

e[; 'kCn % सीमापार आतंकवाद, भारत–पाकिस्तान संबंध, छद्म युद्ध, लश्कर–ए–तैयबा, जैश–ए–मोहम्मद, पुलवामा, कश्मीर मुद्दा, हाइब्रिड वॉरफेयर।